

अनुमान लगाना

पठन-पाठन की एक मूल्यवान युक्ति

पूजा बहुगुणा*

अनुमान लगाना पठन का एक बुनियादी कौशल माना गया है। हम प्रायः पढ़ते समय अनुमान लगाते हैं। मनोभाषाविद् स्मिथ (1975) ने बताया कि अनुमान लगाना पठन क्रिया का मूल है। अनुमान लगाना, बच्चों में विकसित हो रही पठन प्रक्रिया का विकासात्मक चरण है। पढ़ते समय अनुमान लगाना एक स्वाभाविक क्रिया है, जिसके होने का आभास भी शायद नहीं हो पाता, पर अनुमान लगाने का पठन से गहरा रिश्ता है। फिर क्यों हम बच्चों को पढ़ने और सीखने के शुरुआती वर्षों में अनुमान लगाने की आजादी नहीं देते? कक्षा में बच्चे द्वारा अनुमान लगाए जाने को स्वीकार करना, उसे अनुमान लगाने देना, बच्चों में पढ़ने के कौशल विकसित करने में सहायक होता है। यह लेख पढ़ते समय अनुमान लगाने के महत्व को दर्शाता है। बच्चे कैसे अनुमान लगाते हुए पढ़ते हैं और पढ़ने का आनंद उठाते हैं, इसे लेखक द्वारा उदाहरण देकर प्रस्तुत किया गया है।

बच्चे प्रायः कहानियाँ सुनते या पढ़ते समय अनुमान लगाते हैं। अनुमान लगाना पठन का एक बुनियादी कौशल माना गया है। अनुमान लगाना हमारे जीवन में होने वाली एक स्वाभाविक क्रिया है और हम अक्सर अनुमान लगाते रहते हैं, ऐसे ही बच्चे भी अनुमान लगाते हैं। पढ़ते समय भी अनुमान लगाना स्वाभाविक रूप से चलता रहता है। स्मिथ (1975) ने अपने लेख में बताया है कि अनुमान लगाए बिना, पढ़ना संभव ही नहीं है। अनुमान लगाना पठन क्रिया का मूल है। स्मिथ ने इसे प्रिडिक्शन (prediction) बताया है। पाठक अपने पूर्वानुभवों की मदद से पढ़ते हैं, ये पूर्वानुभव अनुमान के रूप में सजीव होते हैं और पाठक को पठन सामग्री से जोड़ते हैं। बच्चों द्वारा

लगाए गए अनुमान पठन सामग्री के हर संभव अर्थ या समझ तक उन्हें पहुँचाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बुनियादी साक्षरता अर्थात् पढ़ने-लिखने के बुनियादी कौशल को महत्व देती है। इस नीति के अनुसार शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में सीखने की बुनियाद ऐसी होनी चाहिए, जिसमें आनंद आए, बच्चे खेल-खेल में सीखें और सक्रिय भूमिका निभाएँ। अनुमान लगाते हुए पढ़ना इन सभी सिद्धांतों पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मौलिक सिद्धांतों में से एक है— सृजनात्मकता और समीक्षात्मक सोच को प्रबल करना। यह नीति बताती है कि समकालीन समय में शिक्षा ऐसी हो, जो बच्चों की रचनात्मक और पारखी सोच को

प्रबल को। अनुमान लगाना ऐसी सोच पर आधारित एक क्रिया है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— फाउंडेशनल स्टेज 2022* भी शिक्षा के बुनियादी कौशल पढ़ने और लिखने के विकास की महत्ता की ओर हमारा ध्यान केंद्रित करती है। इसके अनुसार एक अच्छा शैक्षणिक संस्थान वह है, जो हर विद्यार्थी और उसकी अनोखी सोच का स्वागत करे तथा जहाँ स्फूर्तिदायक सीखने का माहौल हो। इस दिशा में पढ़ते समय बच्चों को अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करना एक ठोस कदम हो सकता है।

पढ़ते समय अनुमान लगाना कई कारणों से बहुत महत्व रखता है। सर्वप्रथम अनुमान लगाना एक महत्वपूर्ण पठन युक्ति है। अनुमान लगाना बच्चों को किसी पठन सामग्री में अनेक रूपों में दी गई जानकारी को उपयोग करने देता है, जैसे— कहानी का शीर्षक, चित्र आदि। इस जानकारी का उपयोग कर बच्चे कई तरह से अनुमान लगाते हैं, जैसे— किताब या कहानी किस बारे में होगी, आगे क्या हुआ होगा, क्यों कोई पात्र विशेष प्रकार का व्यवहार कर रहा है, उसका अगला कदम क्या होगा आदि। इस प्रकार देखें तो पढ़ना, बिना अनुमान के संभव ही नहीं है, क्योंकि पढ़ना वास्तव में अर्थनिर्माण करना है, जैसे कि कहानी पढ़ते समय उसमें दी गई घटनाओं से जुड़े बच्चों के पूर्वानुभव, अनुमान के रूप में सजीव होते हैं और अर्थनिर्माण में योगदान देते हैं। बच्चे अनुमान लगाते हुए पढ़ने का खूब आनंद भी उठाते हैं। अनुमान लगाते हुए पढ़ना कहानी से बच्चों का अपनेपन का रिश्ता जोड़ देता है। अनुमान लगाना कोई साधारण कौशल नहीं है और न ही इसकी उपयोगिता साधारण है। अनुमान लगाते हुए

पढ़ना बच्चों को पढ़ने के प्रक्रिया के वास्तविक रूप का आभास कराता है। हाल में हुए शोध अध्ययन यह सिद्ध करते हैं कि पढ़ना, कोई ध्वनियों का केवल सही उच्चारण मात्र नहीं है। इसका अर्थ निर्माण से गहरा रिश्ता है (स्मिथ, 1975 एवं सिन्हा, 2012)। पढ़ने का उद्देश्य लिखित चिह्नों में निहित संदेश को समझना है। इसीलिए अनुमान लगाना अर्थ निर्माण की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। *एंड टर्म सर्वे रिपोर्ट— मथुरा पायलट प्रोजेक्ट (2013)* में भी यह पाया गया कि जो बच्चे सदर्भ-संकेतों और चित्र-संकेतों की मदद से अनुमान लगाते हुए पढ़ रहे थे, वे बच्चे पठन सामग्री को समझने में सफल रहे।

चूँकि बिना अनुमान के पढ़ना संभव नहीं है, अतः कक्षा में पढ़ते समय अनुमान लगाने के अवसर मिलना और उन्हें विकसित करना शिक्षण पद्धति का प्रमुख हिस्सा होना चाहिए। अनुमान लगाना, बच्चों में विकसित हो रही पठन प्रक्रिया का विकासात्मक चरण है। स्मिथ (1975) ने यह भी बताया कि बच्चों को अनुमान लगाने का कौशल पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि बच्चे बोलते या पढ़ते समय स्वाभाविक रूप से अनुमान लगाते हैं। कोई भी बच्चा जो बोलना जानता है और भाषा को सुनकर समझता है, वह अनुमान लगाने में भी सक्षम है। शिक्षक का काम है कि वे पढ़ते समय बच्चों को अनुमान लगाने और उन पर चर्चा करने के अवसर दें, विशेषकर पढ़ना सीखने के शुरुआती वर्षों में।

अनुमान लगाना क्या है?

स्मिथ (1975) के अनुसार अनुमान लगाना, अप्रासंगिक विकल्पों को हटाने की या अस्वीकार करने की क्रिया है। जैसा कि पहले भी बताया गया

कि पाठक अपने पूर्वानुभवों की मदद से पढ़ते हैं। पढ़ते समय ये पूर्वानुभव, अनुमान के रूप में सजीव होते हैं और पाठक को पठन सामग्री से जोड़ते हैं। बच्चों द्वारा लगाए गए अनुमान पठन सामग्री के हर संभव अर्थ या समझ तक उन्हें पहुँचाते हैं। अनुमान लगाने के लिए किसी पाठक को कई कार्य करने होते हैं, जैसे लेखक द्वारा दिए संकेतों को समझें और इस्तेमाल करें। पठन सामग्री से जुड़े अपने पूर्वानुभवों को सोचें और उपयोग करें। लेखक द्वारा दिए संकेतों और अपने पूर्वानुभवों में संबंध बैठाते हुए अनुमान लगाए। यह सभी बिना जाने, किसी पाठक के दिमाग में चलता रहता है। यह अर्थ निर्माण का आधार है, क्योंकि पठन सामग्री की समझ बनाते हुए पाठक हर उस विकल्प को नकारते चले जाते हैं, जो अर्थ से मेल नहीं खाते या जिसके होने से सार्थक अर्थ नहीं निकलता है। आइए, एक उदाहरण से इसे समझें। कक्षा दो की एक छात्रा ने 'लुढ़कता पहिया' नामक कहानी पढ़ते समय, कहानी में दी एक पंक्ति को ऐसे पढ़ा—

हमें पहाड़ी के ऊपर और घाटी में नीचे जाना पड़ेगा।

“हमें पहाड़ी के ऊपर और खाई में नीचे जाना पड़ेगा।”

इस पंक्ति को पढ़ते समय बच्ची 'घाटी' शब्द पर अटकी, फिर उसने इस शब्द को 'खाई' पढ़ा। 'घाटी' शब्द को 'खाई' पढ़ना कोई संयोग नहीं था, बल्कि बच्ची पढ़ते समय बन रही अपनी समझ के अनुसार ही शब्दों का अनुमान भी लगा रही थी। बच्ची द्वारा लगाया गया अनुमान, अर्थ के अनुसार उचित शब्द के बहुत समीप थी।

शब्दों के कई अर्थ हो सकते हैं, पर जब हम अनुमान लगाते हैं तो शब्द के एक संभव अर्थ की ओर बढ़ते हैं। बच्ची का घाटी को मैदान, तालाब

न पढ़कर, खाई पढ़ना दर्शाता है कि वह पढ़ते समय संदर्भ-संकेत की मदद से अनुमान लगा रही थी और उसके अनुमान अर्थ की एक संभावना की ओर उसे ले जा रहे थे।

अनुमान लगाते हुए पढ़ने का एक उदाहरण

प्राथमिक स्तर की कक्षा दो का अवलोकन करते समय लेखिका ने अनुमान लगाने के कौशल के महत्व को महसूस किया। दिल्ली के इस सरकारी स्कूल की दूसरी कक्षा में प्रायः पढ़ाई की शुरुआत कहानी की किताब पढ़ने या सुनने से होती है। शिक्षिका कहानी की किताब से कहानी को उच्च स्वर में पढ़कर सुनाती है। कहानी पढ़ने की इस प्रक्रिया में शुरू से अंत तक बच्चे अनुमान लगाने के कौशल का भरपूर उपयोग करते हैं। शिक्षिका भी प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। ऐसे ही एक दिन शिक्षिका राजा और गौरैया की कहानी पढ़ रही थी। कहानी शुरू करने से पहले शिक्षिका ने बच्चों से कहानी की पुस्तक के मुख्य पृष्ठ देखने और शीर्षक सुनकर, कहानी का अनुमान लगाने को कहा। बच्चों ने भी उत्सुक होकर कई अनुमान लगाए। किसी बच्चे ने कहा कि गौरैया राजा की दोस्त होगी तो किसी बच्चे ने कहा कि राजा ने गौरैया को पिंजरे में कैद कर रखा होगा।

शिक्षिका ने पुस्तक के पहले दो-तीन पृष्ठ पलटो। बच्चों ने उन पृष्ठ पर बने चित्रों को देख कहानी के पहले भाग के बारे में अनुमान लगाने की कोशिश की। एक बच्चे ने कहा, “गौरैया, राजा के लिए कुछ पका रही है”, तभी दूसरे बच्चे ने कहा, “नहीं, राजा कुछ पका रहा है और गौरैया खाने आ गई है।”

इस प्रकार कहानी पढ़ने से पहले ही बच्चे अनुमान लगाने की इस प्रक्रिया में कहानी के पात्रों को और उनसे जुड़े अनुभवों को सजीव कर पाए। सजीव हुए अनुमान ने कहानी को समझने में मदद की। साथ ही, कहानी के प्रति बच्चों में विशेष रुचि भी जाग गई।

इस प्रकार एक भूमिका गढ़ने के बाद शिक्षिका ने कहानी पढ़नी शुरू की। बच्चों के बीच शांति बनी हुई थी, पर अनुमान लगाना जारी था। शिक्षिका ने यह पंक्ति पढ़ी, “राजा, गौरैया को खाना पकाते देख हँसा, इतना हँसा कि उसके आँखों से आँसू निकलने लगे।” इस पंक्ति को सुन एक बच्चा सोचकर बोला, “ऐसे बोलते हैं कि ये तो खुशी के आँसू हैं।” जब शिक्षिका ने उस बच्चे से पूछा कि राजा के आँसू खुशी के आँसू कैसे हुए, तो वह बच्चा बोला कि राजा को आनंद आ रहा था। कहानी सुनने के दौरान बच्चों का अनुमान लगाना जारी था। शिक्षिका भी प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करती थी। शिक्षिका ने पूछा, “तुम्हें क्या लग रहा है कि चींटे ने क्यों पूछा कि नर गौरैया कहाँ जा रहे हो?” एक बच्चे ने ऊँचे स्वर में कहा, “शायद मदद करेगा।” बच्चे का यह अनुमान सही निकला। हालाँकि अनुमान लगाने का सरोकार जीत-हार या सही-गलत होने से नहीं है पर अनुमान सही निकले तो किसी उपलब्धि से कम महसूस नहीं होता है।

कहानी के अंत में कुछ बच्चों ने अनुमान के आधार पर शिक्षिका से कुछ सवाल भी पूछे, जैसे एक बच्चे ने पूछा, “मैम, अब उन्होंने खिचड़ी दोबारा बनाई होगी क्या।” इस प्रकार कहानी सुनने के इस अनुभव में बच्चों की भूमिका सक्रिय थी तथा वे निरंतर अनुमान लगा रहे थे।

सीखने की अन्य गतिविधियों के दौरान अनुमान लगाना

अनुमान लगाने का कौशल केवल कहानी पढ़ने तक ही सीमित नहीं होता है। नन्हे पाठक कविता पढ़ते या सुनते या गुनगुनाते समय भी अनुमान लगाते हैं, जैसे— बादल भैया बहुत हुआ, कविता पढ़ते समय एक बच्चे ने कविता की यह पंक्ति पढ़ी— जाए कहाँ, कहाँ पर खेलें, घर में फँसे... इस पर बच्चा अनुमान लगाते हुए कविता आगे बढ़ाता है और कहता है, “मम्मी पापा की डाँट सुनो।” यह विचार अनुपम था और कविता के अनुसार सटीक था। ऐसा विचार बच्चे के अनुमान लगाने से आया। बच्चे का अनुमान उसके पूर्व अनुभव पर आधारित रहा होगा। वर्षा के समय बच्चे अधिकतर घरों में बंद रहते हैं और मम्मी-पापा के प्यार-दुलार के अलावा उनकी डाँट भी सुनते हैं। इसी कविता की आगे की पंक्तियों पर भी बच्चे अनुमान लगाते हैं, जैसे पंक्ति थी— सूरज दादा... इस पंक्ति को सुनते ही कई बच्चे बोले, “धूप खिलाओ।” यह विचार भी अनुमान लगाने का खूबसूरत परिणाम था, जो कि पहली पंक्ति से बिल्कुल मिलता-जुलता था— धूप खिलाएँ। इस प्रकार कविता वाचन के समय अनुमान लगाना स्वाभाविक है, बल्कि अनुमान लगाना कविता को आगे बढ़ाने की लिए भी आवश्यक है। बच्चे अनुमान के आधार पर रचनात्मक रूप में सोचते हैं और अपनी रचनात्मकता को निखारते हैं।

बच्चे जब चित्र बनाते हैं, तो उनकी रचना उनके पूर्व अनुभवों के साथ-साथ उनके अनुमान पर आधारित होती है। बच्चों को अगर ऐसा वातावरण मिले, जहाँ उन्हें अपनी रचनात्मक सोच को उपयोग

करने की पूरी छूट हो, तो उनकी रचना उनके अनुमान को दर्शाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में बच्चों को खेल के माध्यम से सिखाने के सिद्धांत पर बल दिया गया है। विशेष रूप से खेल के समय बच्चे कैसे सोच-विचार करते हैं, जो अचरज और उमंग से भरा होता है, इस बिंदु पर विशेष बल दिया गया है। खेल और अनुमान लगाना एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। खेल में अनुमान लगाना होता है और बिना अनुमान लगाए खेल, खेल नहीं होता है। अतः अनुमान लगाना ही खेल में अचरज और उमंग को कई गुना बढ़ा देता है।

अनुभव में छिपी कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें

इस अनुभव ने अनुमान लगाने से जुड़ी कई बातों की ओर संकेत किया है। बच्चे पढ़ते समय सहज हों और अनुमान लगाएँ, इसके लिए दो आवश्यकताएँ पूरी होनी आवश्यक हैं। पहला— पठन सामग्री, जिसे पढ़ना और अनुमान लगाना है, अर्थपूर्ण होनी चाहिए। दूसरा— बच्चों को अनुमान लगाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, जिससे वे भय मुक्त होकर अनुमान लगा सकें।

कक्षा के अवलोकन के दौरान लेखिका ने यह भी पाया कि कुछ बच्चे शांत थे। वे अनुमान लगाने व कहानी पढ़ने का आनंद ले रहे थे, पर सक्रिय तौर पर वे अपने अनुमान को व्यक्त नहीं कर रहे थे। इसका एक कारण यह हो सकता है कि ये बच्चे अनुमान लगाने या अपने अनुमान बताने में संकोच करते हों। ऐसे में आवश्यक है कि उन्हें शिक्षक द्वारा निरंतर प्रोत्साहन मिलता रहे। शिक्षक द्वारा बच्चों को निरंतर महसूस कराया जाए कि उन्हें अनुमान लगाने की आजादी है और उनके अनुमान महत्वपूर्ण हैं।

कहानी सुनते या पढ़ते समय अनुमान लगाना और भी कई बातों की ओर संकेत करता है, क्योंकि अनुमान निराधार नहीं होते हैं। बच्चे कहानी में दी गई घटनाओं से जुड़े अपने पूर्वानुभवों के आधार पर या कहानी की संरचना से जुड़े अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाते हैं, जैसे— कहानी के अंत में खिचड़ी बनी होगी, यह अनुमान बच्चों की कहानी की संरचना से जुड़े अनुभवों पर आधारित है। बच्चों को पता था कि खिचड़ी बनने की बात कहानी में पूरी नहीं हो पाई, जो कि अब अंत में पूरी हो सकती है। इस प्रकार, कहानी में दी घटना, जो किसी कारण से पूरी न हो पाई हो, वह अंत में पूरी होती है।

पढ़ते समय अनुमान लगाना कई स्तरों पर होता है। चाहे शब्दों का अनुमान लगाएँ, किसी छोटी घटना का अनुमान लगाएँ या पूरी कहानी का। पढ़ते समय अनुमान लगाना, पढ़ने की प्रक्रिया को रोचक भी बनाता है। पाठक अनुमान लगा रहे हैं, इस ओर संकेत करता है कि वे सक्रिय तौर पर पठन सामग्री से जुड़ने की और उसे समझने की कोशिश कर रहे हैं। अनुमान लगाते हुए पढ़ने के साथ-साथ गलतियाँ होने की संभावना भी जुड़ी होती है। शिक्षक एवं अभिभावक बच्चे द्वारा कोई शब्द अलग तरह से पढ़ने पर उन्हें तुरंत टोकते हैं और सही करने लगते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि बच्चे ने कुछ गलत पढ़ा या कोई गलती की है। उन्हें समझना चाहिए कि क्या वह एक गलती थी या नहीं! यह आवश्यक है कि वे समझें कि बच्चे ने दिए गए शब्द को जब अलग तरह से पढ़ा, तो क्या इससे अर्थ में बदलाव आया या नहीं! अगर बदलाव नहीं आया है, तो उन्हें टोकना ही क्यों? और अगर बदलाव आया

भी तो अनुमान लगाने और पढ़ते समय बच्चों को गलतियाँ होने पर टोके नहीं, बल्कि बच्चों को आगे पढ़ते रहने दें और देखें कि बच्चे अपनी गलती खुद स्वीकार करते हैं और उन्हें सही कर पाते हैं या नहीं। इससे यह भी पता चलेगा कि बच्चे समझ से पढ़ रहे हैं या नहीं।

क्या होना चाहिए?

जैसा कि इस लेख में बताया गया कि अनुमान लगाते हुए पढ़ना, पठन के सही स्वरूप अर्थात् अर्थ निर्माण का हिस्सा है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे एक एक शब्द जोड़कर पढ़ने की बजाय, जब अनुमान लगाते हुए पढ़ते हैं तो वे पढ़ने के सही स्वरूप का अनुभव करते हैं। यही अनुभव पढ़ने को रोचक बनाता है और बच्चों को पढ़ने के प्रति आकर्षित करता है। बच्चों को पढ़ते समय अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित

करें। इसके लिए आवश्यक है कि अध्यापक को पढ़ना और अनुमान लगाने के संबंध के बारे में समझ हो। इस प्रकार वे सही अर्थ में पढ़ना क्या है, को भी समझ सकेंगे।

निष्कर्ष

बच्चे जब अनुमान लगाते हैं, तब वे पढ़ने का वास्तविक आनंद उठाते हैं। इस लेख में बच्चों में पढ़ने का आनंद उठाने की बात पर बल दिया गया है, क्योंकि पढ़ने का आनंद उठाना और पढ़ते हुए खुश होना एवं उत्साहित होना, पढ़ना सीखने के मुख्य उद्देश्य हैं, जो कि पढ़ना सीखने के शुरुआती वर्षों में अनुमान लगाते हुए पढ़ने से प्राप्त होता है। पढ़ते समय अनुमान लगाना और पढ़ते-पढ़ते पुष्टि करना कि अनुमान सही है या नहीं, यह अपने आप में आनंददायक अनुभव होता है।

संदर्भ

- रा.शै.अ.प्र.प. 2012-13. *एंड टर्म सर्वे रिपोर्ट— मथुरा पायलट प्रोजेक्ट*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.
- . 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. 23 दिसंबर 2023 को <https://scert.cg.gov.in/pdf/ncf-2022/NCF-FS-Hindi-Ver 23Dec22.pdf> से प्राप्त किया गया.
- शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली को 20 जनवरी 2023 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया.
- सिन्हा, एस. 2012. *रीडिंग विदाउट मीनिंग— द डाइलेमा ऑफ इंडियन क्लासरूम्स*. लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग. 1(1). पृष्ठ संख्या 22-26.
- स्मिथ, एफ. 2004. *अंडरस्टैंडिंग रीडिंग— अ साइकोलिंग्विस्टिक एनालिसिस ऑफ रीडिंग एंड लर्निंग टू रीड*. न्यूयार्क.
- . 1975. *द रोल ऑफ प्रिडिक्शन इन रीडिंग*. *एलीमेंट्री इंग्लिश*. 52(3). पृष्ठ संख्या 305-311. 29 अप्रैल 2021 को <http://www.jstor.org/stable/41592609> से प्राप्त किया गया.